

मुमितसागर जीमहाराज की दीक्षा तथा और भी कई दीक्षाये हुई सगमग ५०-६० चौके लगते थे चर्णा का दृश्य वहा ही अनुषम था। नमीग्तु नमीस्तु शब्दों से सारा शहर गुःजायमान हो जाता था। इस चातु मिस कमेटी के मंत्री का भार भी आप को दिया गया आपने परिधम पूर्वक संघ की वैयावृत्ति की तथा व्यवस्था की जिससे चातुमीस सफलता पूर्वक सम्पन्न हुआ।

चातुर्भास सम्पन्त होने के परचात आचार्य महाराज ने पंच फत्याणक प्रतिष्ठा के लिए सेठ मूल चन्दजा का ध्यान आकार्यत किया जिसके फलस्थ्य पंच कल्याणक प्रतिष्ठा कराया जाना निश्चय हुआ।

पंच कल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव

सेठ साहैब के सानिध्य में पंच कल्याणक प्रतिष्ठा कमेटी का चुनाव हुआ जिसके मंत्री भी आप ही चुने गये। महोत्सव सं २००६ वंशाल शुक्त पंचमी से नयमी तक विशाल पैमाने प्रहुआ आपने लगगभ दस माह रात दिन अधिक परिश्रम कर महोत्सव में सफलता प्राप्त की ।

महोत्सव में लगभग ५० हजार जनताका एकत्रित होना तया खंडेलवाल महासभा का अधिवे शन होने से उत्सव में चार चांद लग गये।

वैसे तो महोत्सव में नल, विजली, तार, टेली-फोन आदि की तो व्यवस्था थी ही किन्तु, महोत्सव के स्थान पर ही हर समय रेलवे टिकट मिलने से यात्रियों को बड़ी सुविधा रही अस्तु सभी ने इस ब्यवस्था की बड़ी प्रशंसा की।

जैन पंचायत

आप स्थानीय पंचायत का कार्य लगभग ४० वर्ष से मन्त्री पद पर रहकर धामिक एवम् सामाजिक सेवार्ये करते आ रहे हैं। किन्तु वृद्धावस्था तथा अस्व स्थता के कारण कुछ समय से आपको इस सेवा से मुक्त होना पड़ा।

्र राम्य वर्षा

करे प्रशिक्ष कर करे प्रश्नकरण के जिला कर पुत्र कार है के क्रिकेट के पुत्र क्रिकेट जैन्द्रीय के लेखी किन्नी केन नम्मक सर्वेन्द्र क्रिकेट कर प्रश्निक के क्रिकेट किन्नी केन्द्री करेंद्र जन्म के क्रिकेट किन्नी क्रिकेट केन्द्र केन्द्री की क्रिकेट केन्द्री क्रिकेट केन्द्री के क्रिकेट के क्रिकेट किन्नी क्रिकेट केन्द्री केन्द्री के श्री श्रीकेट केन्द्री कर केन्द्री केन्द्री केन्द्री केन्द्री केन्द्री केन्द्री केन्द्री कर क्ष्रिकेट केन्द्री कर केन्द्री केन्द्री केन्द्री कर केन्द्री कर केन्द्री कर केन्द्री केन्द्री कर केन्द्री केन्द्री कर केन्द्री केन्द्री केन्द्री कर केन्द्री केन्द्री कर केन्द्री केन्द्री कर केन्द्री के

्यो सन्तिस्ताम क्षीमवास्व













" तत्त्वार्थसूत्र - कर्तारम्-उमास्वामि मुनीश्वरम्। श्रुतकेवलि -- देशीयं-वन्देऽहं गुण - मन्दिरम् ॥" - मैसूर नगरताल्लुक-शिलालेख न० ४६





कर्मित् के विकास क्रिके एका स्वयंत्रकार सहस्य सम्पन्धांन करूकाता है व बीतकार सम्पन्धांन स्वयंत्रकार विकास सम्पन्धांन

मस्मारकोष की सम्बद्धि केंगे को है है

तिनसर्गादधिगमध्या ॥३॥

सम्पादर्शन निमयं अर्थात जिल्ल स्वभाव से परोप्येम के विना सथा ध्वितम अर्थात पर के प्रपत्ति में, शास्त्र स्वयम में अर्थात रेम को प्रकारों से प्रपत्त होता है।

तुल्द कोत कोत से हैं है

जीवात्रीवाराववन्धसंबरनिजेरा

मोक्षास्तत्त्वम् ॥४॥

जीव, अजीत, आसव, बन्ध, संवर निर्द्रश और मोस वे सात सन्द्र हुँ ।

सम्माप्तीत क्या गानी नी नीते जाना जाता है ?



(तर्रेश, क्यांधाव, साधव, अर्थकरण, दियांव और विषास कुल्के द्वारा भी कोवधंद सत्य समा स्थायाद्यांव लाम-प्यांग्य का मान क्षेत्रा है। (प्रकृ का कन्नोय कुल्यांव है)

कृत अप अर्थनिते र शत की क्षत्र होता है -महमहेसाक्षेत्र स्पर्गत कासान्तर भावाल्प बहुर्स्वश्च ॥=॥

मन् (Existence) संत्या, क्षेत्र, प्रयान, काम, सम्तर (विष्णुकाम) प्राच और प्रम्पवहाय (Quantity) नामके इत आट समुगोर्गो में भी जीवादि माओं आदि का काम क्षेत्र है।

शत के किशी केंद्र हैं— मतिश्रुतार्याधमनःपर्ययकेंद्रकानि ज्ञानम् ॥९॥

ानम् ॥९॥ मधिनान, सुनतान, धर्मधानन, मनः पर्वय



क्रान्त्र अवस्तिनीयतेना चाँन अभेरतन क्रितेशक वस्त्र । अभन्यत्र बुम्पन् क्रोपेन क्षेत्र वर्ते

新生物性 我 我想 有的多 新門 "我们是一

मनिः रम्भिः मारा गिलाः मिनियोष

द्रमनपरिहतम् ।। १३।।

साँग, स्पूर्ण, संसद, ईश्वामा, प्रतिमीत्रशीय इत्यादि प्रतिमान्द्र से कृत्य गाम है इ

我是一个人 大學 大學 大人多

त्राचिन्द्रयानिन्द्रियनिमिसम् स्युप्तः।

सङ्ग्रीतस्य योग द्वीरण कीर गत की
सरायन में रोग है।

सहित्यपुर्व के दुस्तान की हैं उसके हैं है

्यावप्रदेश्वायपार्याः सप्रस एतिसङ्के सम्बद्धः (सामान्य समस्तेष्य).

som F & hore



गुणित करने पर (४० % ६ ७ २००) मतिमात के २०० भेद होते हैं।

अर्थस्य ॥१७॥

कदर कहे गये गतिसान के भेट सर्प के होते हैं। (स्पिर और स्पूल सम्मुकों अर्प यानी। पदार्प काते हैं।)

मितिहान के सम्बन्ध में आँउ भी यताते हैं-स्यञ्जनस्यावग्रहः ॥१८॥

स्थान परार्थ (अर्थात अस्पवत अवगट स्था प्रवादि परायों का) अवग्रह मान होता है। (ईहा आवाद, ओर पाश्चा रूप मान नहीं होते) यह अवप्रह भी १२ भेटों सहित सक्षु और मन को स्रोड़ भेष सार इन्द्रियों से ही होता है इस प्रकार स्थानन अवग्रह मतिनान के १ ४ १२ × ४ = ४ द भेट होते हैं। पिद्धते २ = भेटों को जोड़ने पर







इन दीनों में क्या अन्तर है है

विगुद्धप्रतिपातास्यां तद्विशेषः ॥२४॥

विशुद्धि (आस्मा के परिणामों को निर्मलता) और अप्रतिपात (संयम में पतिन न होने के कारण) को अपेशा ऋजुमती से विषुत्तमनी में विशेषता है।

प्रकृषि और मन,पर्वेष मान में चना जनार है ? - विशुद्धिक्षेत्रस्वामिविषयेस्योऽविधमनः - पर्यययो: ।।२४।।

सर्वाय और मनःपर्वय ज्ञान में विगुद्धि, क्षेत्र, स्वामी और विषय की अपेशा अन्तर है। (अवधिज्ञान से मनःपर्वय ज्ञान विगुद्ध है। लेकिन अवधिज्ञान का शेत्र अधिक है। मनःपर्वयज्ञान के स्वामी विज्ञिष्ट संयम वाले मनुष्य ही होते हैं। अवधिज्ञान कारों हो गतिवाँ में होता है)









धीपनिमन माय के या नेप-

सम्बद्धचारिहो ॥३॥

ओपशनिक सम्बन्ध्य और औपशमिक चारित्र ये वो औपशमिक भाव हैं।

क्षायिक माय के भी मेद हैं —

ज्ञानदर्शनदानलाभभोगोपभोगवीर्याण

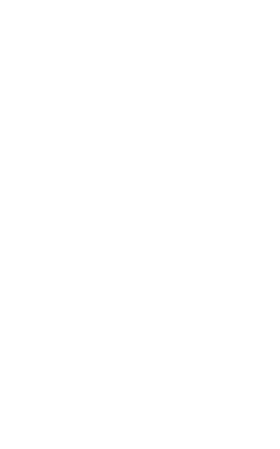
च ॥४॥

झान, दर्शन, बान, लाभ, भोग उपभोग, धोर्य तया सम्बद्धत्व और चारित्र ये नौ झाविक भाव के भेव हैं।

धायोपगमिक (मिश्र) नाव के अठारह मेर — ज्ञानाज्ञानदर्शनलब्धयश्चतुस्त्रित्रिपञ्च भोदाः सम्यक्त्वचारित्रसंयमासंय-मारच ॥५॥

--- ₹ ३ ---







।। अप्नाम् में प्रक्रमं क्ष्में क्ष्में क्षित्र क्षित्र क्ष्में क्षे

अद र्ध ।

— एत्रान्त १३ घटनी होस्स क्षित्र १३ घटनी होस्स ११ व्याप्त क्षित्र क्ष्य १४ व्याप्त १५ व्याप्त १ व्याप्त व्याप्त व्याप्त व्याप्त १५ व्याप्त १ व्याप्त १५ व

नीन शोरती मान बता है— १९९१ मान प्राप्ति स्था है स्वरोत्त समा, प्राप्त, वांच दृष्टियों के मान है स्वरोत, रसमा, प्राप्त,

ससे भीत्र १

अय द्रिस्यों के विषय असाने हैं— स्पर्शरसान्ध्रयणेशृद्धारस्तरयोः ॥२०॥



—जाक क वाष स्टून्स ११४८। :१क्ट्रिस : सदस्या: ११४८। १ हे शिष्ट हेंक क्षित्र क्षित्र हो। ४४

भिर स्त्रीर सम् में १५०१ मन्छ—विगण्डी इदि सन्त्री में गिष्टीम । है सिष्ट्रिम सिकेर । है सिद्ध एक्षी श्रीध व्यव्य व्यव्या

रमा कं 16माझा कि मम गम्बी मं शीप द्वापी —है 7AE 1क्सपूर्व है 11र्गड़ किंक

तिग्रह्मतो कमेयोगः ॥२४॥

हे एत्राम गांग प्राम क्ष्माम में लीगद्रप्रश्ची रिम्मू में लीग क्यू गांग में गांग प्रमाण में लीग १ हे 163म समा में लीग



with the state (state that the 116 ti. ven leibbind börkali ***************

that his bestell his piete bist babl 1 差 执法设置 医动脉织性 化二羟二苯酚醇 医腺素 which had been a topogeth fit this alone freign ein gebrie beiten mir uigern

i f ikši kližien mb विवर्णान मूल तीक है। या जान भोती ne ti anangikan ng r

table the best balliest is air ladge

1 g kom in 1156km, inua

til this an own in his expetith र्वश्च संबव्धात्रकार्यः भट्टम 精致性 多名 机油 医鸡头 出点



नहीं प्रीक्ष कांच एक रंग्नी नीक रेंड उन्हें प्री कि मड़े (रिड़े क्षाड़ प्र एप्टेश हैं कि में प्रेम कि मड़े कि कि प्रकार है कि में कि प्रा

ें हैं 151ड़ केंसको मन्ह शाप

इबसारकाणामुपपादः ।।३४।।

। डै 181ड़ करक त्राप्तफट व्हें फिक्षीगर गोर दर्ह -कर किंगर । डैं हिंडु क्तफट हें 1थर डॉक्ट्र र । डैं हिंगरी केंग्न हुई र्गार कि किंति हैं किंग्र श

म्हन्छन मा सम्बन्धाः सम्बन्धाः ।। ३५॥ श्रेषाणाः सम्बन्धाः

गात्रेहा। गिरिहारिक स्नीग

करोतिष्ट में लिडि मन्त्र अपने प्रतिक्रम के जिल्लिस करोतिष्ट में सिंह मन्त्र अपने से कि स्वार्थ के स्वार्थ के स्वार्थ के स्वार्थ के स्वार्थ के स्वार्थ के स्वार्थ के

-हैं सिंह के जाकर मेहनी प्री माक्रमत्तर्हकराष्ट्राक्रघोद्गीहेकशीड्मि

म्प्रि) मेत्रीइधि उदिए (ई डिक्टि इस स्ट्र)



। है एईप एए ताम्प्रेस में निष्य सिर्म

अनन्त्रगुणे पर्रे ॥३६॥

ហើយទ វាវិទ មឃិត តៅមន វាវិព វ៉េទ ខា គឺរាស ទារាទូខេ តាំមន ទី ឥវិទ្ធ ទ័ពទ បានរប បំពួកកស ទ្រិ តិវ៉ុទ្ធ ពេទ្ធ បំពួកភាន អី វាវិរិទ ម៉ំឌាក់ អី វាវិរិធ

—क्तमिक स्टिस्स स्टिस्स अस्ति ।। ।।०४॥ सिद्यतिष्ठा

कांग्र प्रिया हु हिंदि दे लोमाय प्रीक्ष सक्ते कप्तीप कि न दे लीमक हु मड़ोप्रतासतीय स्नेक्ष् । है दिन्दि कि क्षित्रों न प्रीक्ष है हिंदर प्रेस्ट से शिक्ष्य

-- मन्त्रम में प्रताथ क विषय रिक्स मर्के ११० ४११ कि विश्वमित्री मिश्र

। हे शिष्ट

थाम के ामशर प्रशिप्त व्योमाक प्रीर सहसे रिष्ठप्र धन्ध्रम से स्नाक श्रीरूष्ट (१४९९)र कि सीरूम्)

सर्ध्य ॥४४॥



their out the

वीक्षीक प्रकार देशके करा है— अपियादिकों वेशिक्षाम् । ४६॥ प्रकार अस्य स्वयं संज्ञान्य होतं बोक्षीय गरोर विस्ता केर कांचेस संज्ञान्य होतं विकास गरोर

स्य द्वारा स्थाप स्थाप स्थाप स्थाप नीयसिक सर्घर संस्थलनी हे जन्म स्थाप स्थाप स्थाप संस्था है।

1128 1 Planeh Franch von 1820 – 18300 – 1830 – 1830 – 1830 – 1830 – 1830 – 1830 – 1830 – 1830 – 1830

कर हैंगे हैं की जान ज योह से योह करहे अर्थ तहीं है तात अंगर्स अन्त ने हिल्पकों है जी उदार का पूर्व अंगर्स हैंगा हैं। है जी उदार का पूर्व अंगर्स हैंगा हैं।



गुद्धाः अस्य सुद्धाः । द्वा सुद्धाः । १८ हो। इ.स.च्या सुरक्षाः सुद्धाः सुद्धाः

न्यात मर्ग्य विकास मन्त्र सामा स्थापन मामा भौषपादिक्तम्यामा सामान्य सामान्य विकास

गुष्रेत्रनवत्विषुवः ॥४३॥

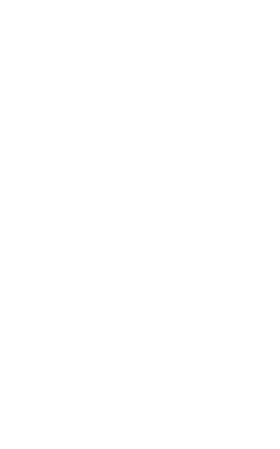
(सिराप रहि छई) ज़िया केंग्ने मन्द्र अपट मिनामर्थां रुक्त्रेस सोर्ग्स) मेंग्रेस महिन्स्य ज़िया कुछ कि मोष्ट्रेस्स क्ष्येस क्ष्येस माज्ञेस [रिक्र ग्रेसि मेंग्स में श्रीध कुळ स्त्रहा

हनार और निरुवी मीथा सम्बद्धा क्षान्य हो। हन्द्रीय अध्यापः









मेंडे स्टम्स में किस्त्र हैं। है से शक्स 9 में में क्ष्मीट्र कर कवचेंच कर और स्वाक्स को सेक सिम मेंड्र स्वास्त्र के क्षिय में अस्त्र में में होम मेंड्र स्वास्त्र के सिमस्त्र के स्वास्त्र के

—्रे ए मक एकी लीक्जी कि फिक्कि 11=p11 त्रीप्रदेशक 1 है रिक्ट रिक्ट अपन्य क्षाप्त क्षाप्त कि

112911 म हिस्सी नीग्रस्-कुरान, वानस्तुनार-कार्यक, कार्यन्त्रमक -कुस-प्रांतर , कप्टाहुम-कप्ट, कार्याक-कान्तर, प्रम



the planta simple are a kin spirit in who wind ky higher their and him नेत होतेहा, याच बतुत्ता है है। व प्रतिक कर् मानिक्षामा कार्रे करते कराई है समावनिकार क क्षेत्रक में कि कि कि कि कि कि कि कि कि कि

and added: dean natu · 京南江东南南村 1.19

1 \$ (41) .

mariant with a dutie of duck limited and mailer and a think transmit to take to an Link to type a to the to the total of their 數据 豪東 熱視養 釋 不致者 安安 九代母 阿皮爾 斯波 Range auf fet Land fenig ift ein eine ba

usen populzinkerprochip ्र ए ए ई ईस्सार १० १८ अलुक्त

; 2 lbb E (अजीव तरव का वर्णन)

તમે સતમે સાધાત્ર સાદ્ર તેર્વાસ ૧૩૯ सहवारिया ११५११ किए फिरिएट्टर जीएंग एए एक्टी द्विए क विशोहें। (कास देख का शाम है पूर्वतस से बारों अजीय (भेरत रहित) है

हैं ,(हे मान के ibse की मान सम गिवकापाधमाधमाकायापुर्गाताः

भाव महासंक्ष्य प्रकास के विकास गहेत हथहाह

23 9 9 1 4 1 m mor mer 18, 190

14 33 110 110mb 10 16 2 114 4 2 B Fig. 348 Right Gree Jeb J

1 10 11 4 110 11 10 1 1 12 12 25 30 T



